पाठ - 12

नींव का पत्थर

आइए सीखें - ■स्वाभिमान, देश-भक्ति और आत्मोत्सर्ग की भावना। ■एकांकी विधा से परिचय। ■स्वतंत्रता-संग्राम के अमर सेनानियों के बारे में जानकारी। ■मुहावरों और लोकोक्तियों की समझ और उनका प्रयोग।

पात्र परिचय

लक्ष्मीबाई	:	झाँसी की रानी
जूही और मुन्दर	:	लक्ष्मीबाई की सहेलियाँ
रघुनाथ राव	:	लक्ष्मीबाई की सेना का सेनापति
तात्या	:	लक्ष्मीबाई के एक सहयोगी, सन् 1857 (अठारह सौ सत्तावन) के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
रामचन्द्र	:	लक्ष्मीबाई का सरदार
गोरा	:	अंग्रेज सैनिक

(रंगमंच पर युद्ध-भूमि का दृश्य। महारानी लक्ष्मीबाई के तम्बू का एक भाग दिखाई देता है। पर्दा उठने पर महारानी लक्ष्मी बाई अपनी सखी जूही के साथ उत्तेजित अवस्था में मंच पर प्रवेश करती है।)

लक्ष्मीबाई : मेरे देखते-देखते क्या से क्या हो गया जूही? झाँसी, कालपी, ग्वालियर कहाँ से कहाँ पहुँच गई; परन्तु मंजिल है कि पास आकर हर बार दूर चली जाती है। स्वराज्य को आते देखती हूँ, परन्तु दूसरे ही क्षण मार्ग में हिमालय अड़ जाता है। जूही, मैंने प्रतिज्ञा की थी कि अपनी झाँसी नहीं दूँगी। लेकिन झाँसी हाथ से निकल गई। (अत्यन्त धीमे स्वर में) झाँसी हाथ से निकल गई जूही। (सहसा तीव्रतर होकर) नहीं, नहीं, झाँसी हाथ से नहीं निकली। मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी। मैं झाँसी लेकर रहूँगी। मैं अकेली हूँ, लेकिन उससे क्या? अकेली ही झाँसी लेकर रहूँगी।

जूही : कौन कहता है, आप अकेली हैं महारानी? हम आपके साथ हैं; फिर यह निराशा कैसी?

लक्ष्मीबाई : मैं निराश नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं झाँसी लेकर रहूँगी, लेकिन क्या तुम नहीं जानती कि उस दिन बाबा गंगादास ने कहा था फिर मिट जाना; जब तक हम विलास-प्रियता को छोड़कर जन-सेवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नहीं मिल सकता। वह मिल सकता है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।

शिक्षण संकेत - ■छात्रों से पात्रों के सम्वाद अभिनय के साथ करवाइए ■नाटक की कथा वस्तु पहले कहानी के रूप में सुनाइए।

जूही : लेकिन महारानी, उन्होंने यह भी तो कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है, स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना; स्वराज्य की नींव का पत्थर बनना। सफलता और असफलता देव के हाथ में है। लेकिन नींव का पत्थर बनने से हमें कौन रोक सकता है? वह हमारा अधिकार है।

लक्ष्मीबाई : (मुस्कराकर) शाबाश मेरे कर्नल! तुम लोगों से मुझे यही आशा है, जिस स्वराज्य की नींव तुम जैसी नारियाँ बनने जा रही हैं, वह निश्चय ही महान् होगा। मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि वह मेरे जीवनकाल में आता है या नहीं आता।

जूही : (चौंककर) महारानी, महारानी, आपने कुछ सुना?

लक्ष्मीबाई : (मुस्कराकर) सुना, ये तोपों का स्वर है, जूही।

मुन्दर : लेकिन फिरंगी की तोपों का स्वर। फिरंगी आ गए हैं।

लक्ष्मीबाई : मैं जानती थी कि वे आएँगे। तुम जल्दी जाओ और अपनी सेना को देखो। रघुनाथराव से कह दो कि कूच के लिए तैयार रहें। किसी भी क्षण आवश्यकता पड़ सकती है।

मुन्दर : जो आज्ञा! (जाती है)।

लक्ष्मीबाई : और जूही, तू अगर तात्या को खोज सके तो तुरन्त उन्हें यहाँ आने के लिए कह।

जूही : खोज क्यों नहीं सकती? आपकी आज्ञा होने पर मैं उन्हें पाताल से भी खींचकर ला सकती हूँ। (जाने को मुड़ती है कि रघुनाथराव तेजी से प्रवेश करते हैं।)

रघुनाथराव : महारानी, आपने सुना?

लक्ष्मीबाई : क्या 'रघुनाथ'?

जूही : क्या हुआ सरदार?

रघुनाथराव : महारानी, जनरल ह्यूरोज की सेना ने मुरार में पेशवा की सेना को हरा दिया।

जूही : (काँपकर) क्या पेशवा की सेना हार गई?

लक्ष्मीबाई : पेशवा की सेना हार गई, यह अच्छा ही हुआ। अब पेशवा की आँखें खुलेंगी। रघुनाथ, अपनी सेना को तैयार होने की आज्ञा दो। ह्यूरोज ग्वालियर का किला नहीं ले सकेगा।

रघुनाथराव : मैं जानता हूँ वह कभी नहीं ले सकेगा। मैं अभी सेना को कूच करने के लिए तैयार करता हूँ। केवल आपको सूचना देने के लिए आया था। (जाता है)

लक्ष्मीबाई : और जूही, तुम भी जाओ। (सहसा बाहर देखकर) लेकिन ठहरो, शायद सेनापति इधर ही आ रहे हैं।

जूही : (बाहर देखकर) जी हाँ, ये तो सरदार तात्या ही हैं। (सरदार तात्या का प्रवेश)

लक्ष्मीबाई : कहिए सरदार तात्या, आज आप इधर कैसे भूल पड़े?

तात्या : बाई साहब, मैं किसी के लिए सरदार हो सकता हूँ पर आपके लिए तो सेवक ही हूँ।

लक्ष्मीबाई : यह तो भाँग छानने का अवसर है। आप इधर कैसे आ गए? शायद पेशवा ने भी भाँग बाँटने की आज्ञा दी है।

तात्या : महारानी जी, इस भाँग ने ही तो हमें इस दशा में पहुँचा दिया है। ये तोपें हमारी नहीं जनरल ह्यूरोज की हैं। उसने मुरार पर अधिकार कर लिया है।

लक्ष्मीबाई : कर लिया तो मैं क्या करूँ? उसने ठीक ही किया।

तात्या : (तड़पकर) बाई साहब, ऐसा नहीं कहें। अब तो आप ही रक्षा कर सकती हैं। क्षमा कर दें, राव साहब ने कहलवाया है।

लक्ष्मीबाई : (तीव्र होकर) राव साहब ने अब कहलवाया है। अब नींद खुली है आप लोगों की। मैंने बार-बार समझाया, पर आपने नहीं सुना। ग्वालियर का किला क्या जीत लिया, मानो सारे हिन्दुस्तान को जीत लिया। उस जीत के नशे में तुम भूल गए कि यह किला हमारा अंतिम लक्ष्य नहीं था; लक्ष्य पाने का एक साधन मात्र था। तुम साधन को लक्ष्य समझ बैठे। तुम्हारा त्याग, तुम्हारी तपस्या, तुम्हारा बलिदान, सब ढोंग साबित हुए।

तात्या : (व्यग्र होकर) बाई साहब, आप यूँ कब तक फटकारती रहेंगी।

जूही : सरदार, इस बार उनको माफ कर दीजिए।

लक्ष्मीबाई : तू कहती है? अच्छा लेकिन..............(मुन्दर का प्रवेश)

मुन्दर : सरदार, सेना तैयार है।

लक्ष्मीबाई : तो मैं भी तैयार हूँ। तात्या तुमसे मुझे बहुत आशाएँ थीं। तुम्हारे रहते यह सब क्या हो गया?

जूही : सरकार, ये स्वामीभक्त हैं।

लक्ष्मीबाई : लेकिन आज हमें स्वामीभक्त से ज्यादा देशभक्तों की आवश्यकता है खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

तात्या : इसीलिए तो आया हूँ बाई साहब! आप जो कहेंगी वही करूँगा। जो योजनाएँ बनाएँगी उन्हीं पर चलूँगा।

लक्ष्मीबाई : तो जाओ और याद रखो, हमें स्वराज्य लेना है। हमें रण-भूमि में मौत से जूझना है।

तात्या : महारानी, आपकी जय हो। मैं युद्ध के लिए तैयार होकर आया हूँ।

लक्ष्मीबाई : जानती हूँ। लेकिन सेनापति इस बार यह याद रखना कि यदि दुर्भाग्य से विजय न मिल सकी तो तुम्हें सेना और सामग्री दोनों को दुश्मन के घेरे से निकालकर ले जाना है।

तात्या : ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई : तात्या मेरा मन कहता है कि यह मेरे जीवन का अंतिम युद्ध है। जीत हो या हार, मुझे किसी बात की चिंता नहीं। चिंता केवल इस बात की है कि हमारी वीरता कलंकित न होने पाए।

तात्या : बाई साहब! वीरता आपको पाकर धन्य है; आपके रहते कलंक हमारी छाया भी नहीं छू सकेगा। आज्ञा दीजिए, प्रणाम।

लक्ष्मीबाई : प्रणाम तात्या। मैं सीधी युद्ध भूमि में जा रही हूँ, देर न लगाना। (तात्या चला जाता है)

मुन्दर : सरकार, आज मैं बराबर आपके साथ रहूँगी।

जूही : और मैं तोपखाना सँभालूगी।

लक्ष्मीबाई : और हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे। 'हर-हर महादेव।' (युद्ध का कोलाहल, एक क्षण बाद अट्टहास करती हुई जूही मंच पर प्रवेश करती है। पीछे-पीछे मुंदर है।)

मुन्दर : अरे जूही, तू इतना क्यों हँस रही है?

जूही : मुझे कल की याद आ रही है मुन्दर! हमारा 'पठान' सरदार कैसे चिल्ला चिल्लाकर लड़ता है। "हमारी बात मुलाहिजा करो।" "हमारी बात मुलाहिजा करो।" और उस स्मिथ की सेना ने बार-बार फाटक पर हमला किया परन्तु हर बार उसे पीछे हटना पड़ा।

मुन्दर : लेकिन इसमें तो इतना हँसने का कोई कारण नहीं है।

जूही : क्यों नहीं है? पठान सरदार की तोपों की मार से फिरंगी पीठ दिखा दें और मुझे हँसी न आए? स्वराज्य की लड़ाई में हम एक मंजिल और बढ़जाएँ इस पर भी मैं हँस न सकूँ? आज तो आकाश भी हँस रहा है, धरती भी हँस रही है। पेड़-पौधे, फूल-पत्तियाँ, पक्षी सभी हँस रहे हैं। (जोर से हँसती है। मुंदर भी हँस पड़ती है।)

मुन्दर : मुझे अपने पठान सरदार पर बड़ा गर्व है लेकिन सिपाही को क्या इस तरह हँसना चाहिए?

जूही : सोचकर देखूँगी।

मुन्दर : तुमसे बात करना बेकार है। अच्छा क्या बाई साहब पूजा कर चुकी होंगी? (लक्ष्मीबाई का प्रवेश)

लक्ष्मीबाई : कर चुकी मुन्दर। मैं तैयार हूँ। तूने सबको सूचना दे दी न? और घोड़ा ले आई?

मुन्दर : बस वहीं जा रही थी कि इस पगली की हँसी ने मुझे रोक लिया अब जाती हूँ। इसे आप सभालिए। (मुन्दर जाती है।)

लक्ष्मीबाई : (जूही के कंधे पर हाथ रख कर) तू इतना क्यों हँस रही है? सिपाही को इतना नहीं हँसना चाहिए।

जूही : मुन्दर जितनी समझ तो मुझमें नहीं है बाई साहब। पर इतना जरूर जानती हूँ कि हँसने से मृत्यु का डर दूर हो जाता है।

लक्ष्मीबाई : सच? तब तो मुझे भी हँसना चाहिए।

जूही : जरूर हँसना चाहिए बाई साहब और आज तो हमें स्वराज्य लेना है या उसकी नींव का

पत्थर बनना है। बीच का कोई रास्ता नहीं।

लक्ष्मीबाई : हाँ जूही, अब तो इधर या उधर। (मुस्कराकर) अच्छा अब तू पठान सरदार को ढूँढ़कर कल वाली बात की याद तो दिला।

जूही : कौन-सी बात की बाई साहब?

लक्ष्मीबाई : यही कि कोई वैसी बात हो तो उन्हें सेना लेकर निकल जाना चाहिए और स्वराज्य की लड़ाई जारी रखनी चाहिए।

जूही : क्षमा करें बाई साहब। आप बार-बार उन अशुभ परिणामों की कल्पना क्यों करती हैं?

लक्ष्मीबाई : सैनिकों के लिए शुभ और अशुभ कुछ नहीं होता। उसे सब कुछ की कल्पना करनी पड़ती है, क्योंकि उसका लक्ष्य शहीद होना ही नहीं, जय पाना भी है। मैं तो कहूँगी जय पाना ही उसका लक्ष्य है।

जूही : समझ गई बाई साहब। अभी जाती हूँ। (जाती है। लक्ष्मीबाई एक क्षण उसको जाते देखती है और फिर मुस्करा उठती है।)

लक्ष्मीबाई : कैसी सरल, कैसी वीरबाला है? एक मुन्दर है, मानो वीरता की साक्षात् मूर्ति हो। एक यह जूही है कि डर भी जिससे स्वयं डरता है। क्या इनके रहते हुए हमारी पराजय हो सकती है?

(मुन्दर का प्रवेश)

मुन्दर : बाई साहब, घोड़ा ले आई हूँ। आइए देख लीजिए।

लक्ष्मीबाई : चलो (दोनों द्वार के पास आती है) जानवर देखने में सुन्दर है (एक क्षण के लिए बाहर निकल जाती है। मुन्दर वहीं दीवार का सहारा लिए खड़ी रहती है। लक्ष्मीबाई दूसरे क्षण ही लौट आती है।) मुन्दर, घोड़ा सचमुच सुन्दर है, परन्तु अस्तबल का जीव जान पड़ता है। ऐसे घोड़े कभी-कभी युद्ध-भूमि में अड़ जाया करते हैं लेकिन कोई चिन्ता नहीं। अब तुम दामोदर को देखो। उसे खिला-पिलाकर रामचन्द्र की पीठ पर बाँध देना और हाँ, रघुनाथ कहाँ है?

मुन्दर : वे सब इधर ही आने वाले थे। लीजिए, वे आ भी गए। आइए, आइए, आप लोग इधर आइए। (उसी क्षण रघुनाथराव, रामचन्द्र तथा दूसरे कई सरदार मंच पर आकर लक्ष्मीबाई को प्रणाम करते हैं।)

लक्ष्मीबाई : मैं अभी आप लोगों की चर्चा कर रही थी। आप सब तैयार हैं न?

रघुनाथराव : जी महारानी जी। हमने मोर्चा पर प्रबन्ध कर लिया है।

लक्ष्मीबाई : रामचन्द्र, आज तुम दामोदर को अपनी पीठ पर बाँध लेना। अगर कहीं मैं वीरगति पाऊँ तो............।

शिक्षण संकेत - ■उर्दू/अरबी/फारसी के शब्दों के सही उच्चारण करवाइए, तथा उनके अर्थ भी स्पष्ट कीजिए।

रामचन्द्र : ऐसा न कहें महारानी जी। जीत हमारी ही होगी।

लक्ष्मीबाई : मैं भी ऐसा ही मानती हूँ। मानना भी चाहिए, लेकिन फिर भी सेनापति को सभी स्थितियों के लिए तैयार रहना आवश्यक है। इसीलिए मेरे मर जाने पर तुम दामोदर को दक्षिण ले जाना। स्वराज्य की लड़ाई समाप्त नहीं होनी चाहिए।

मुन्दर : स्वराज्य की लड़ाई स्वराज्य मिलने पर ही समाप्त हो सकती है, बाई साहब।

लक्ष्मीबाई : तभी तो कहती हूँ कि हमें केवल नाम के लिए नहीं लड़ना चाहिए।

रामचन्द्र : आपकी आज्ञा का पालन होगा महारानी जी।

लक्ष्मीबाई : और रघुनाथ, तुम्हें इस बात का ध्यान होगा कि फिरंगी मेरी देह को न छूने पाएँ।

मुन्दर : बाई साहब, आप बार-बार मरने की ही बात क्यों करती हैं?

रघुनाथराव : सावधान मुन्दर। सिपाही को व्याकुल नहीं होना चाहिए। महारानी जी, विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी पवित्र देह को छूनें का साहस केवल पवित्र अग्नि ही कर सकेगी।

मुन्दर : बाई साहब, मेरी भी एक प्रार्थना सुन लीजिए। जीते जी सदा आपके साथ रही। मरने पर भी आपके साथ रहना चाहती हूँ।

लक्ष्मीबाई : ऐसा ही होगा। ला, हम सबको शर्बत पिला, हम सब चलें।

मुन्दर : अभी लाती हूँ, बाई साहब। (जाने को मुड़ती है कि सहसा बिगुल बज उठता है।)

लक्ष्मीबाई : तो फिरंगी का बिगुल-बज उठा। शर्बत रहने दो मुन्दर। अब तो वीरता का शर्बत हमारी राह देख रहा है। चलो दुश्मन को छीनकर हम सब उस पर अधिकार करेंगे। हर-हर महादेव। (सभी लोग हर-हर महादेव का स्वर घोष करते हैं। मंच पर प्रकाश धुधँलाने लगता है। तोपों का गर्जन तीव्र होता है। मंच पर पूर्ण अन्धकार छा जाता है। आवाजें उसी प्रकार उभरती रहती हैं। फिर प्रकाश उभरने लगता है। उसी समय मुन्दर तेजी से प्रवेश करती है।)

मुन्दर : रानी साहिबा, रानी साहिबा, स्थानीय सेना का एक हिस्सा दुश्मन से जा मिला।

लक्ष्मीबाई : (काँपकर) जा मिला? जो डर था, वही हुआ। लेकिन चिन्ता नहीं। तात्या को इस बात की सूचना दो। और जूही से कहो कि तोपखाने को चेतन करके मार तेज कर दे।

मुन्दर : अभी जाती हूँ महारानी। (मुन्दर जाती है। कोलाहल तेज होता है। लक्ष्मीबाई पूर्णतः तेज स्वर में कहती है।)

लक्ष्मीबाई : वीर, सैनिको, अच्छा हुआ जो वे कायर हमसे अलग हो गए। तुम उन्हें बता दो कि स्वराज्य के लिए वीर सैनिक फौलाद की चट्टान की तरह होते हैं। शाबाश, स्वर्ग से देवता तुम्हें देख रहे हैं। देश की लाज तुम्हारे हाथों में है। सैनिको, अपनी तलवारों की चमक से दुश्मन की आँखों को चौंधिया दो। (मुन्दर का तेजी से प्रवेश)

मुन्दर : (काँपकर) सरकार, सरकार जूही...............

लक्ष्मीबाई : क्या हुआ जूही को? क्या वह घायल हो गई? उसकी मरहम-पट्टी का प्रबन्ध हुआ?

मुन्दर : बाई साहब, जूही घायल नहीं हुई। तलवार से लड़ती हुई वह स्वर्ग चली गई। दुश्मन की साँडनी सवारों की एक पूरी टुकड़ी उसके तोपखाने पर जा टूटी और वह चारों ओर से घिर गई। लेकिन वह तनिक भी तो नहीं घबराई। तलवार हाथ में लिए नाचती रही और हँसती रही। शत्रु के सैनिक बहुत कीमत देकर उसे स्वर्ग भेज सके। परन्तु उसकी हँसी अभी भी युद्ध में गूँज रही है। प्राणों ने उसका साथ छोड़ दिया परन्तु उसकी हँसी अब भी उसके मुख पर नाच रही है?

(सहसा मुन्दर जोर से हँस पड़ती है।) ....

लक्ष्मीबाई : मुन्दर, मुझे जूही पर गर्व है, लेकिन तू इतना क्यों हँसती है? क्या तू भी जाने वाली है? (रघुनाथ का तेजी से प्रवेश)

रघुनाथराव : महारानी! दुश्मन की पैदल सेना ने पीछे से आकर हमला बोल दिया हम घिर गए हैं। सावधान (उसी तेजी से चला जाता है।)

मुन्दर : पीछे से हमला हो गया है, महारानी हम घिर गए हैं।

लक्ष्मीबाई : (पास आकर) कोई चिन्ता नहीं। मैं राव साहब की ओर जाती हूँ। तुम अपने मोर्चे पर जाओ। आज के दिन के लिए ही हमने जन्म लिया हैं। (तेजी से मुड़ती है कि तात्या मंच पर प्रवेश करते हैं।)

तात्या : (हाँफता हुआ) बाई साहब, जो होना था, हो चुका। अब कोई आशा नहीं।

लक्ष्मीबाई : मैं जानती हूँ, लेकिन तुम्हें अपना काम याद है।

तात्या : याद है बाई साहब, मैं आपको भी निकाल कर ले जा सकता हूँ। आप मेरे साथ चलें।

लक्ष्मीबाई : नहीं तात्या! यह नहीं होगा।

तात्या : तो मुझे अपने पास रहने की आज्ञा दीजिए।

लक्ष्मीबाई : तुम दुर्बल हो। नहीं जानते कि स्वराज्य हम सबसे बड़ा है। इसीलिए कलेजे पर पत्थर रखकर सेना को निकाल ले जाओ। आजादी के युद्ध की यह लौ कभी नहीं बुझनी चाहिए। यह मेरी आज्ञा है।

तात्या : आपकी आज्ञा का पालन होगा - बाई साहब। (तेजी से बाहर जाता है। पीछे-पीछे लक्ष्मीबाई और मुन्दर भी जाती है। युद्ध-घोष तीव्र होता है। दो क्षणों के लिए मंच पर यही स्वर गूँजता रहता है। सैनिक लड़ते हुए इधर से उधर, उधर से इधर आते हैं, तभी मुन्दर के साथ रघुनाथ वहाँ प्रवेश करते हैं।)

रघुनाथराव : मुन्दर, महारानी कहाँ है? शत्रु बहुत तेज हो रहा है। तुम्हे उनका साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

मुन्दर : उनके पास पहुँचने के सब रास्ते बन्द हो चुके हैं? (दोनों ऊँचे स्थान पर चढ़जाते हैं।) वह देखो, सरदार, महारानी किस तरह दोनों हाथों में तलवार लिए लड़ रही हैं मानों साक्षात् महाकाली हम लोगों की रक्षा के लिए धराधाम पर उतरी हैं। वह देखो, वे बाहर निकलने

के लिए मार्ग खोज रही हैं। सरदार तात्या नहीं दिखाई दे रहे हैं।

रघुनाथराव : सरदार रानी का आदेश पूरा कर रहे हैं। वे दुश्मन का व्यूह तोड़कर दक्षिण की ओर बढ़रहे हैं। (सहसा काँपकर) अरे इधर तो देखो। रामचन्द्र घिर गया। दामोदर उसकी पीठ पर है। (चिल्लाकर) ठहरो शैतानों तुम उसे छू नहीं सकते। (तेजी से निकल जाता है।)

मुन्दर : ओह, मैं क्या करूँ? इधर महारानी है, उधर उनका बेटा है, किधर जाऊँ? मैंने रानी से कहा था कि आपके साथ रहूँगी, लेकिन रानी का बेटा तो रानी से भी बढ़कर है। उसका जीना आवश्यक है। वह जिएगा तो..........नहीं, नहीं, महारानी........बाई साहब..... नहीं, मुझे दामोदर के पास जाना चाहिए। (चिल्लाकर) ठहरो रामचन्द्र, मैं आती हूँ। हर-हर महादेव (तेजी से बाहर जाती है। शोर बढ़ता है। दूसरे ही क्षण लक्ष्मीबाई मंच पर प्रवेश करती है। वे बहुत घायल हो चुकी हैं, लेकिन आवेश में पुकारती हुई आती हैं।)

लक्ष्मीबाई : नही, तुम मुझे नहीं पा सकते। मैं तुम सबको समाप्त कर दूँगी। यह लो (मुड़कर आक्रमण के लिए बाहर झपटती हैं। दूसरे ही क्षण हँसती हुई लौटती हैं।) सब भाग गए। चारों ओर सन्नाटा ही सन्नाटा है। मृत्यु का सन्नाटा, पराजय का सन्नाटा। स्वराज्य की मंजिल दूर रह गई। लेकिन कोई डर नहीं। मैंने नींव इतनी मजबूत डाली है कि जब उस पर भवन बनेगा तो प्रलय भी उसे नहीं डिगा सकेगा। (रघुनाथ मुन्दर के शरीर को पीठ पर उठाए मंच पर प्रवेश करता है) कौन रघुनाथ? यह तुम्हारी पीठ पर कौन है? मुन्दर? तो मुन्दर गई? मुन्दर भी गई रघुनाथ?

रघुनाथराव : हाँ महारानी, मुन्दर भी गई। एक-एक करके सभी नींव के पत्थर बन गए। इसकी देह को कोई छू न सके, इसीलिए उठा लाया हूँ, लेकिन आप सावधान रहें। शत्रु के सैनिक इसी ओर आ रहे हैं। मैं मुन्दर का दाहासंस्कार करने के लिए उधर जा रहा हूँ।

लक्ष्मीबाई : जाओ रघुनाथ। मुन्दर को अपने हाथों से चिता में समर्पित कर दो। जाओ मैं शत्रु से अंतिम बार लोहा लेने जा रही हूँ। (दोनों चले जाते हैं। एक गोरा सैनिक कई सैनिकों के साथ मंच पर प्रवेश करता है।)

गोरा : ए पकड़ो, पकड़ो वह कण्ठे वाली रानी है। देखो, कैसे तलवार चलाती है? उसे पकड़ो (तेजी से रामचन्द्र प्रवेश करता है)

रामचन्द्र : रानी को पकड़ने से पहले अपने को सँभाल। (दोनों लड़ते हुए बाहर जाते हैं। चीख की आवाजें सुनाई देती हैं। तभी एक सैनिक दौड़ता हुआ आता है।)

सैनिक : मुझे अभी रघुनाथराव की तलाश करनी है। महारानी का घोड़ा अड़ गया है और फिरंगियों ने उन्हें घेर लिया है। (पीछे मुड़कर देखता है।) वह देखो, महारानी कितनी बहादुरी से लड़ रही हैं। नहीं नहीं मैं आपको छोड़कर नहीं जा सकता। (तेजी से वापस जाता है।) दूसरे ही क्षण महारानी की हर-हर महादेव की आवाज उभरती है। फिर पिस्तौल की आवाज उभरती है। रघुनाथ चीख उठता है और दूसरे ही क्षण घायल रानी को संभाले हुए मंच पर प्रवेश

करता है।)

लक्ष्मीबाई : रघुनाथ, सब कुछ समाप्त हो गया। मैं भी अब नींव का पत्थर होने जा रही हूँ।

रघुनाथराव : ओह महारानी! बाई साहब! आपके सिर और छाती से खून बह रहा है और आपकी आँखें.......।

लक्ष्मीबाई : आँख कट गईं रघुनाथ। अच्छा हुआ। अपनी पराजय अपनी आँखों से नहीं देख सकी। तुम्हें याद है, मैंने क्या कहा था, मेरी देह को........। (महारानी बेहोश हो जाती है। रामचन्द्र दामोदर को पीठ से बाँधे हुए मंच पर प्रवेश करता है।)

रघुनाथराव : रामचन्द्र, जल्दी करो। महारानी बेहोश हो गई हैं। इन्हें बाबा गंगादास की कुटिया में ले चलो। शत्रु किसी भी क्षण आ सकता है।

रामचन्द्र : (रुंधे कण्ठ से) यह क्या हो गया? (सहसा लक्ष्मीबाई आँख खोलती हैं।)

लक्ष्मीबाई : कौन रामचन्द्र? दामोदर कहाँ है?

रामचन्द्र : दामोदर मेरी पीठ पर है। महारानी, मैंने वचन दिया है उसका पालन करूँगा। मैं उसे सुरक्षित दक्षिण ले जाऊँगा।

लक्ष्मीबाई : पा...............नी।

रघुनाथराव : जल्दी रामचन्द्र, जल्दी। इन्हें बाबाजी के पास ले चलो अन्त बहुत समीप है। (दोनों बड़ी सावधानी से रानी की देह को उठाकर ले जाते हैं।)

लक्ष्मीबाई : (दूर से आते क्षीण स्वर) रामचन्द्र तेज........अंतिम...........बार.........चमक...... रहा है।

रघुनाथ : स्वराज्य की ज्योति कभी नहीं बुझ सकती। वह अमर रहेगी। सूर्य का तेज अनन्त सूर्य में विलीन हो गया है। लेकिन रानी की स्वराज्य की भूख भारत के जन-जन की भूख बन गई है।

जाओ रानी याद रखेंगे, हम कृतज्ञ भारतवासी।

यह अनुपम बलिदान जगाएगा स्वतन्त्रता अविनासी।

(परदा गिरता है।)

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर देश के वरिष्ठ साहित्यकारों में से एक हैं। इन पर आर्य समाज का प्रभाव बचपन से ही था। उनकी प्रकाशित कहानियों में 'संघर्ष के बाद', धरती अब भी घूम रही है, आवारा मसीहा, निशिकान्त, अर्द्धनारीश्वर प्रमुख है।

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

निराशा	-	फिरंगी	-	कूच	-	रण-भूमि	-
कलंक	-	मुलाहिजा	-	अस्तबल	-	व्यूह	-
कृतज्ञ	-						

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

(क) जूही के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है - 'हँसना' आपको जूही की हँसी से क्या प्रेरणा मिलती है?

(ख) "वीरता कलंकित न हो, सुशोभित हो" इसके लिए कौन-कौन से कार्य करना चाहिए?

(ग) निम्नांकित के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए -

(क) लक्ष्मीबाई (ख) मुन्दर (ग) तात्या

2. निम्नांकित कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए -

(क) हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे।

(ख) सूर्य का तेज अनन्त सूर्य में विलीन हो गया।

3. निम्नांकित कथन किसके द्वारा कहे गए -

(क) स्वराज्य की लड़ाई स्वराज्य मिलने पर ही समाप्त हो सकती है, बाई साहब।

(..............ने लक्ष्मीबाई से कहा)

(ख) महारानी जी, विश्वास दिलाता हूँ कि आपकी पवित्र देह को छूने का साहस केवल पवित्र अग्नि ही कर सकेगी।

(...............ने लक्ष्मी बाई से कहा)

(ग) मैं किसी के लिए सरदार हो सकता हूँ, पर आपके लिए तो सेवक ही हूँ।

(................ने लक्ष्मी बाई से कहा)

(घ) आज हमें स्वामीभक्त से ज्यादा देशभक्तों की आवश्यकता है।

(.................ने जूही से कहा)

भाषा अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण कीजिए -

2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

विलास-प्रियता, जन-सेवक, स्वामी-भक्त, मरहम-पट्टी

3. सही शब्द पर सही (3) निशान लगाइए -

(क)	दुर्भाग्य	दुरभाग्य	र्दुभाग्य	दुभार्ग्य
(ख)	लक्ष्मिबाई	लछमीबाई	लक्ष्मीबाई	लक्षमीबाई
(ग)	सुरक्षीत	सुरक्षित	सूरछित	सुरशित
(घ)	समर्पीत	समरपित	समर्पित	स्मर्पित
(ङ)	युधघोस	युधघोष	युधघोश	युद्धघोष

4. नीचे दिए गए शब्द समूहों का प्रयोग करते हुए प्रत्येक से एक-एक वाक्य बनाइए -

(क) क्या से क्या हो गया?

(ख) कहाँ से कहाँ पहुँच गई?

(ग) नहीं, नहीं

(घ) कौन कहता है?

5. इस पाठ में कौन, कहाँ, कब, किसने, किसे आदि से बने वाक्य आए हैं। इनसे बने प्रत्येक शब्द के दो-दो वाक्य छाँटकर लिखिए।

6. दिए गए संवादों का हाव-भाव से वाचन कीजिए -

रघुनाथराव - महारानी, आपने सुना?

लक्ष्मीबाई - क्या, रघुनाथराव?

जूही - क्या हुआ सरदार?

रघुनाथराव - महारानी, जनरल ह्यूरोज की सेना ने मुरार की सेना को हरा दिया।

जूही - (काँपकर) क्या पेशवा की सेना हार गई?

7. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थी शब्द लिखिए -

सफलता, दुर्भाग्य, आकाश, चेतन, दुर्बल, दुश्मन

8. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

हिमालय अड़ जाना, नींद खुलना, पीठ दिखाना, कलेजे पर पत्थर रखना

9. निम्नलिखित शब्दों के समास विग्रह करते हुए समास के नाम लिखिए -

देशभक्त, रणभूमि, पेड़-पौधे, वीरबाला, फूल-पत्ती, शुभ-अशुभ, युद्धघोष

योग्यता विस्तार -

1. लक्ष्मीबाई से संबंधित सुभद्राकुमारी चौहान की कविता को यादकर कक्षा में सुनाइए।
2. पाठ में आए ऐसे संवाद जो देश के प्रति प्रेम और उत्साह प्रकट करते हों उन्हें याद कीजिए और अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।
3. अन्य वीरांगनाओं के चित्र संकलित कीजिए।

विजय ध्येय की प्राप्ति में नहीं वरन् उसकी प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयास करने में है।